

इला अमृतम्

तनाव रहित प्रशिक्षण

दक्षिणात प्रशिक्षण एवं सामुसिहिक्यानेस्तुलिपि



walmi

म.प्र. जल एवं भूमि प्रबंध संरथान, भोपाल



विशिष्ट अतिथियों का वाल्मी में आगमन





स्थापना :

मध्यप्रदेश संस्थान के आयाकट विभाग द्वारा सन् 1984 में स्थापित, मध्यप्रदेश वॉटर एंड लैंड मैनेजमेंट इंस्टिट्यूट (वाल्मी), भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त जल एवं भूमि प्रबंध संस्थान है। मध्यप्रदेश सोसायटी रजिस्ट्रेशन अधिनियम 1973 के अन्तर्गत एक सोसायटी के रूप में पंजीकृत इस संस्थान को सन् 1998 में ग्रामीण विकास विभाग के अन्तर्गत हस्तांतरित किया गया। यह संस्थान पिछले 33 वर्षों से राज्य के अधिकारियों, स्टाफ और किसानों के लिए भूमि प्रबंधन और जल प्रबंधन के क्षेत्र में विभिन्न ट्रेनिंग प्रोग्राम्स संचालित कर रहा है। सन् 2014 में पुनर्गठित वाल्मी, आज दो पृथक स्कूलों, वाल्मी स्कूल ऑफ वॉटरशेड मैनेजमेंट और रुरल डेवलपमेंट एवं वाल्मी स्कूल ऑफ कमांड एरिया डेवलपमेंट के माध्यम से शोध क्रियाओं, फार्म ट्रायल्स, विषय अध्ययन के आधार पर कैपेसिटी बिल्डिंग प्रोग्राम्स संचालित करने एवं जल एवं भूमि प्रबंधन के अन्य कार्यों हेतु तकनीकी सहायता उपलब्ध करा रहा है।

लक्ष्य :

जल, भूमि एवं पर्यावरण प्रबंधन के क्षेत्र में प्रशिक्षण, परामर्श, क्रियात्मक अनुसंधान एवं अनुसंसारं प्रदाय कर देश व प्रदेश में आर्थिक एवं सामाजिक समृद्धि सुनिश्चित करने वाला शीर्ष संस्थान विकसित करना।

संस्थान के उद्देश्य :

- विज्ञान की प्रगति एवं वैज्ञानिक गतिविधियों को अपनाकर सैद्धांतिक विधियों से सिंचाई प्रबंध एवं भूमि संधारण को प्रोत्साहन देना।
- सिंचाई प्रबंध एवं भूमि विकास से संबंधित अनुसंधान एवं प्रयोग करना तथा इन क्षेत्रों में क्रियाशील अन्य संस्थाओं से सहयोग कर शासन की क्षेत्रीय संस्थाएं एवं अन्य संस्थाओं को सिंचाई प्रबंध, भूमि सुधार एवं असिंचित कृषि में परामर्श प्रदान करना।
- सिंचाई प्रबंध एवं भूमि सुधार से संबंधित प्रशिक्षण के लिये संस्थान एवं अन्य विभागों के सदस्यों को देश अथवा विदेश के अन्य प्रशिक्षण संस्थाओं में भेजना।
- संस्थान के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु पत्रिका, नियतकालिक पत्रिकायें, समाचार पत्रिका, पुस्तकें, पोस्टर आदि का प्रकाशन।
- सिंचाई प्रबंध में कृषकों की सक्रिय भागीदारी सामाजिक संगठनों के माध्यम से सुनिश्चित करना तथा सिंचित एवं असिंचित कृषि में जल का समुचित उपयोग हेतु प्रोत्साहित करना।
- भूमि प्रबंध एवं वर्षा आधारित कृषि व्यवस्थापन हेतु प्रारूपों को विकसित करना एवं उसकी उपयोगिता एवं सार्थकता का प्रदर्शन। (अधिकारियों एवं कृषकों को अनुकूल प्रशिक्षण देना)
- जलग्रहण क्षेत्र विकास एवं प्रबंधन कार्यक्रम को सक्रियता से लागू करने और स्थानीय भूमि प्रबंध से संबंधित संस्थाएं जैसे राज्य भूमि एवं पड़त भूमि विकास मंडल इत्यादि से संबंध स्थापित करना।



प्रमुख कार्य क्षेत्र :

1. प्रशिक्षण

2. अनुसंधान

3. सलाहकारिता

4. तकनीकी विस्तार
एवं प्रचार प्रसार

प्रशिक्षण :

संस्थान द्वारा प्रशिक्षण कैलेंडर का निर्धारण विभिन्न संबंधित विभागों एवं योजनाओं के अधिकारियों से चर्चा कर किया जाता है एवं तदानुसार प्रशिक्षणार्थियों के कैडर के अनुरूप प्रशिक्षण मॉड्यूल्स design किये जाते हैं। संस्थान ने विभिन्न विषयक प्रशिक्षणों हेतु संसाधन व्यक्तियों (Resource Persons) को भी सूचीबद्ध (Empanelled) किया हुआ है जिनकी सेवाएं Course Modules designing एवं व्याख्यानों हेतु ली जाती हैं।

प्रशिक्षण कार्यक्रमों को रुचिकर, अर्थपूर्ण एवं प्रभावी बनाने के उद्देश्य से व्याख्यानों में आधुनिक दृश्य शृंख्य उपकरणों के साथ—साथ पेनल डिस्कशन्स, सामूहिक गतिविधियों, समूह प्रस्तुतीकरण, रोल प्ले, प्रक्षेत्र भ्रमण, मूल्योंकन इत्यादि का समावेश भी किया जाता है।

प्रशिक्षणों के Course Module में कक्षागत प्रशिक्षण के साथ—साथ खेलकूद, सांस्कृतिक कार्यक्रम, फ़िल्म प्रदर्शन, योग इत्यादि को भी सम्मिलित किया जाता है ताकि प्रशिक्षण अवधि तथा प्रशिक्षण उपरान्त प्रतिभागियों द्वारा फील्ड में किये जा रहे कार्यों में टीम बिल्डिंग, स्वस्थ वातावरण, अनुशासन इत्यादि निर्मित हो एवं कार्यों का सुचारू संपादन किया जा सके।



प्रशिक्षण विषय एवं विशेषज्ञता :

संस्थान द्वारा निम्नानुसार प्रमुख विषयवस्तुओं पर प्रभावी प्रशिक्षण आयोजित किये जाते हैं:-

1. जल संसाधन नियोजन एवं प्रबंधन।
2. कृषि उपयोग नियोजन, विकास एवं प्रबंधन।
3. मृदा व जल संरक्षण।
4. जलग्रहण क्षेत्र विकास एवं प्रबंधन।
5. उद्यानिकी एवं वानिकी विकास
6. फसल उत्पादन व उत्पादकता।
7. जैविक खेती।
8. जल उपयोग दक्षता (Water Use Efficiency) एवं प्रति बूंद अधिक उत्पादन (More crop per drop)।
9. सहभागिता सिंचाई प्रबंधन।
10. आजीविका निर्माण।
11. निर्माण कार्यों हेतु तकनीकी कौशल्य विकास।
12. छतीय जल संग्रहण (Roof Water Harvesting)।
13. मृदा जांच एवं अनुशंसाएं।
14. कृषि क्लीनिक एवं कृषि बिजनेस।
15. कार्यालयीन प्रबंधन।



16. Soft Skill Development
17. सिंचाई जल एवं पेयजल गुणवत्ता विश्लेषण।
18. लॉजिकल फ्रेमवर्क आधारित परियोजना नियोजन, अनुश्रवण व मूल्यांकन।
19. पंचायती राज व्यवस्था।
20. स्वच्छता एवं स्वास्थ्य।
21. कम्प्यूटर एप्लीकेशन्स।
22. सिंचाई प्रणाली – परिचालन एवं रखरखाव।
23. स्व सहायता समूह।



इन प्रशिक्षणों के अतिरिक्त संस्थान द्वारा ग्रामीण विकास विभाग एवं अन्य विभागों की विभिन्न योजनाओं से जुड़े अमले जैसे मुख्य कार्यपालन अधिकारी, विकासखंड अधिकारी, परियोजना अधिकारी, अतिरिक्त परियोजना अधिकारी, प्रशासनिक व लेखा संबंधी स्टाफ इत्यादि हेतु भी आवश्यकता आधारित प्रशिक्षण कार्यक्रमों का नियोजन व संपादन किया जाता है। संस्थान द्वारा आयोजित प्रशिक्षण आवश्यकता के अनुरूप दीर्घावधि (90 दिवस) से अल्पावधि (1–3 दिवस) श्रेणी के होते हैं।

वर्ष 2017-18 में संस्थान द्वारा आयोजित किये गये प्रशिक्षण निम्नानुसार हैं :

सं. क्र.	विभाग का नाम	प्रशिक्षण का नाम	कुल प्रशिक्षणों की संख्या	कुल प्रशिक्षणार्थीयों की संख्या	कुल प्रशिक्षणार्थी दिवस
1	ग्रामीण विकास विभाग	SRLM Trg.	37	2434	6129
		SRLM Workshop	3	263	263
		NREGS	5	163	473
		CEOs & BDOs Trg.	2	46	1644
		RRDA Trg.	6	207	1015
		RRDA Workshop	3	231	231
		RES AE's	2	121	3630
2	जल संसाधन विभाग	WUA Training	38	1058	3177
		WRD BODHI	6	132	350
		Foundation course AE	1	68	2313
		Visits (Maharashtra & Gujarat)	5	141	826
3	उद्यानिकी विभाग	RHEOs Training Horticulture	5	177	4772
4	लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग	KRC Trg.	2	64	192
5	अन्य	NIH	1	33	165
		NYK	1	125	1936
	कुल		117	5263	27115

अनुसंधान एवं क्रियात्मक अनुसंधान :

जल एवं भूमि प्रबंधन के क्षेत्र में अनुसंधान व क्रियात्मक अनुसंधान संस्थान की एक अत्यन्त महत्वपूर्ण गतिविधि है। अपनी रथापना के साथ ही संस्थान द्वारा सिंचाई जल प्रबंधन एवं सैंचय क्षेत्र विकास के क्षेत्र में आ रही समर्थ्याओं के निराकरण एवं समय-समय पर दृष्टिगोचर हो रही आवश्यकताओं के अनुकूल विभिन्न विषयों पर अनुसंधान व क्रियात्मक अनुसंधान कार्य प्रारम्भ किये गये। प्रदेश में सृजित की गई सिंचाई क्षमता एवं संग्रहित जल से हो रही वास्तविक सिंचाई के बीच में आ रहे अंतर को दूर करने एवं कुशल जल प्रबंधन विषयक अनुसंधान संस्थान की प्राथमिकता रहे हैं। ये अनुसंधान संस्थान द्वारा विभिन्न परियोजनाओं के माध्यम से संबंधित विभागों एवं एजेंसियों से समन्वय स्थापित कर संपादित किये गये हैं।

More crop per drop (प्रति बूँद अधिक उत्पादन) की अवधारणा के महत्व के दृष्टिगत संस्थान द्वारा उन्नत सिंचाई प्रणालियों जैसे स्प्रिंकलर ड्रिप, बार्डर स्ट्रिप, चेक बेसिन इत्यादि के उपयोग एवं प्रचार प्रसार आधारित अनेक क्रियात्मक अनुसंधान परियोजनाएं संस्थान द्वारा संपादित की गई। भारत शासन की “कृषक सहभागी क्रियात्मक अनुसंधान परियोजना” अन्तर्गत संस्थान द्वारा प्रदेश के 18 जिलों के 180 कृषकों के खेतों पर “More crop per drop” अवधारणा अन्तर्गत ट्रायल्स डाले गये एवं विभिन्न उन्नत सिंचाई प्रणालियों का तकनीकी विस्तार किया गया।

सैंचय क्षेत्रों के साथ-साथ संस्थान का वर्षा आश्रित क्षेत्रों में भी जलग्रहण क्षेत्र विकास की अवधारणा के अनुरूप कार्य कर उल्लेखनीय योगदान दिया गया है। संस्थान द्वारा जलग्रहण क्षेत्र विकास से जुड़े मैदानी अमले को न सिर्फ तकनीकी प्रशिक्षण प्रदाय किये गये अपितु अनुसंधानात्मक दृष्टि से संस्थान द्वारा स्वयं कई क्षेत्रों में जलग्रहण क्षेत्र विकास के कार्य संपादित किये गये।



मृदा एवं जल का संरक्षण, संवर्धन एवं कुशल प्रबंधन संबंधित तकनीकों को संस्थान द्वारा परियोजनाओं के माध्यम से खेतों तक पहुँचाया गया है। संस्थान द्वारा संपादित की गई कुछ प्रमुख परियोजनाओं एवं अनुसंधान कार्य निम्नानुसार है :-

- चम्बल प्रोजेक्ट फेज 2 का प्रबंधन एवं संरक्षण।
- म.प्र. के अभिलक्षित सिंचाई प्रोजेक्ट्स में एकशन रिसर्च प्रोग्राम का संचालन।
- सिस्टम ऑपरेशन एवं जल निर्गमन हेतु गाइडलाइन निर्धारण।
- पिटकुही ग्राम में एल.आई.एस. के किसानों के संगठन का अर्थशास्त्र।
- सिंचाई प्रोजेक्ट्स में किसान संगठनों का अध्ययन।
- एस.ए.एस. प्रोजेक्ट का सामाजिक एवं आर्थिक मानदंड अध्ययन।
- बुआई पूर्ण सिंचाई का अध्ययन।

- जल संसाधन विभाग के मानव संसाधन का आंकलन।
- बारना सिंचाई प्रोजेक्ट के लिए कम्प्यूटराइज्ड ऑपरेशन प्लान।
- चम्बल कमांड में मृदा की लवणता एवं क्षारीयता की जांच।
- सम्राट अशोक सागर प्रोजेक्ट की पूर्णता उपरान्त प्रदर्शन का मूल्यांकन।
- जल संसाधन विभाग की प्रशिक्षण आवश्यकताओं का आंकलन।
- रिसर्च प्रोग्राम।
- ओंकारेश्वर सागर प्रोजेक्ट के कमांड एरिया डेवलपमेंट का प्लान।
- बाघेला वॉटरशेड जिला राजगढ़ के लिए कार्य योजना का विकास।
- सेमरी माइको वॉटरशेड जिला सीहोर का विकास।
- ढाबोती माइको वॉटरशेड जिला सीहोर का आंशिक विकास।
- मध्यप्रदेश के चयनित जिलों में पानी रोको अभियान का मूल्यांकन।
- मध्यप्रदेश के वॉटरशेड परियोजनाओं का मूल्यांकन।
- NFFWP के तहत बड़वानी जिले की परिप्रेक्ष्य योजना।
- NREGS-MP के तहत होशंगाबाद और जबलपुर जिले का परिप्रेक्ष्य योजना।
- मध्यप्रदेश के चार शहरों के लिए जी.आई.एस. आधारित अर्बन रन ऑफ मॉडल का विकास।
- MPWSRP परियोजना के प्रभावों की तुलना करने के लिए जल उपभोक्ता संस्थाओं / किसानों का सर्वेक्षण।
- MPWSRP के तहत जल संसाधन विभाग के जल उपभोक्ता संथाओं का फील्ड प्रशिक्षण और कैपेसिटी बिल्डिंग।
- कृषक सहभागी क्रियात्मक अनुसंधान कार्यक्रम – More crop per drop.
- DNID प्राधिकरण, डेनमार्क सरकार के तहत मध्यप्रदेश के रतलाम, धार और झाबुआ में ग्राम स्तर संस्थानों का प्रभावी मूल्यांकन।



वर्तमान में संस्थान द्वारा निम्न परियोजनाओं का कार्य प्रगति पर है:-

- जल संसाधन विभाग से कैड के अन्तर्गत 5 सिंचाई परियोजनाओं (सिंध फेज 2, बरियारपुर, सगड़, बाह एवं माही) कॉन्करेंट थर्ड पार्टी मूल्यांकन अध्ययन हेतु टी.ओ.आर. जल संसाधन विभाग से अनुमोदित होकर प्राप्त हो गया है।
- जल संसाधन विभाग द्वारा राष्ट्रीय जल मिशन को चंबल परियोजना के बैंचमार्किंग अध्ययन के कार्य को वाल्मी को दिए जाने बाबत प्रस्ताव प्रेषित किया गया है।
- जल संसाधन विभाग द्वारा 15 सिंचाई परियोजनाओं के जल उपयोगिता दक्षता अध्ययन संस्थान को दिए जाने हेतु अनुशंसा की है (सूची संलग्न)। यह अध्ययन केन्द्रीय जल आयोग, भारत सरकार द्वारा वित्तपोषित होंगे।

सलाहकारिता :

संस्थान द्वारा समय-समय पर प्रशिक्षण आवश्यकता आंकलन (Training Need Analysis) एवं प्रशिक्षण कार्यक्रमों के प्रतिभागियों से Feedback प्राप्त कर विभिन्न विभागों की आवश्यकता अनुरूप प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये जाने की अनुशंसाएँ प्रदाय की जाती है एवं प्रशिक्षण कार्यक्रमों के Modules व पठन सामग्री विकसित की जाती है।

जल संसाधन विकास के क्षेत्र में संस्थान द्वारा Operational Plan का निर्माण, Irrigation Scheduling फसल नियोजन, फसल जल आवश्यकता का आंकलन, जल उपयोग दक्षता (Water Use Efficiency), पर्यावरण प्रबंधन इत्यादि क्षेत्रों में सलाहकारिता सेवाएँ उपलब्ध कराई जाती है। राज्य की आंकड़े श्वर सागर परियोजना, जिसका सैच्च क्षेत्र 1,46,800 है। हेतु सैच्च क्षेत्र विकास का प्लान संस्थान द्वारा तैयार किया गया। प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना अन्तर्गत जिला सिंचाई प्लान एवं राज्य सिंचाई प्लान के निर्माण में संस्थान द्वारा आवश्यकता अनुरूप सलाहकारिता सेवाएँ एवं सहयोग प्रदाय किया जा रहा है।

राज्य में संचालित की जा रही जलग्रहण क्षेत्र विकास परियोजनाओं के नियोजन एवं क्रियान्वयन में संस्थान द्वारा यथा आवश्यक सलाहकारिता सेवाएँ उपलब्ध कराई जाती हैं।

पूर्व में भी संस्थान द्वारा NREGS योजनान्तर्गत Perspective Plans का निर्माण कार्य किया जाकर जिलों के विकास हेतु सलाहकारिता सेवाएँ प्रदाय की गई।

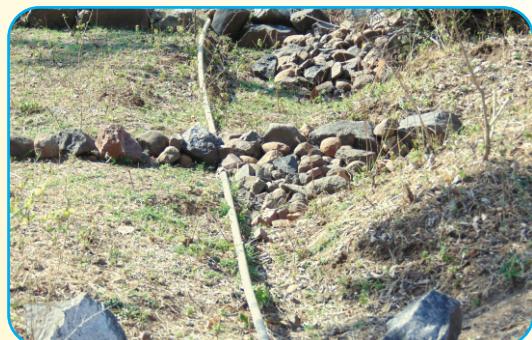
संस्थान स्थित मृदा विज्ञान प्रयोगशाला द्वारा मृदा व जल की जाँच उपरान्त कृषकों एवं मत्स्योत्पादन से जुड़े अमले को आवश्यक अनुशंसाएँ एवं सलाह प्रदाय की जाती है।

प्रदर्शन प्रक्षेत्र :

संस्थान के विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लेने वाले प्रतिभागियों हेतु Field Training एवं Practicals आयोजित किये जाने के उद्देश्य से संस्थान में 30 हेक्टेयर क्षेत्रफल का प्रदर्शन प्रक्षेत्र विकसित किया गया है। इस प्रक्षेत्र में विभिन्न भूमि सामर्थ्य वर्ग की भूमि शून्य से 25–30 प्रतिशत ढाल के साथ उपलब्ध है।

भूमि प्रकार एवं ढाल प्रतिशत के आधार पर भूमि उपयोग नियोजन कर प्रक्षेत्र में उद्यानिकी, वानिकी एवं कृषि फसलों के उत्पादन की तकनीक प्रदर्शित की जाती है। जलग्रहण क्षेत्र विकास की अवधारणा को ध्यान में रखते हुये प्रक्षेत्र में

विभिन्न मृदा एवं जल संरक्षण संरचनाओं जैसे कंटर ड्रैच, कंटर बंड, लूज बोल्डर संरचना, ब्रुश बुड संरचना, गेबियन संरचना, वॉटर हार्वस्टिंग टैंक सेंड बेग संरचना इत्यादि निर्मित की गई है। वॉटरशेड आधारित प्रशिक्षणों में प्रतिभागियों को न सिर्फ ये संरचनाएँ दर्शाई जाती है अपितु उनके द्वारा संरचनाओं का निर्माण भी करवाया जाता है।



प्रक्षेत्र में More crop per drop की अवधारणा अन्तर्गत जल उपयोग दक्षता बढ़ाने की विभिन्न विधियों को भी प्रदर्शित किया जाना है ताकि प्रति सिंचाई की बूँद से अधिक से अधिक उत्पादन प्राप्त किया जा सके। उन्नत सिंचाई प्रणालियों जैसे Drip Irrigation, Sprinkler Irrigation, Boarder Strip, Check Basin इत्यादि के एक ही जगह प्रदर्शन किये जाने से प्रतिभागियों को कम समय में अधिक तकनीकी एक्सपोजर मिलता है।



संस्थान के प्रदर्शन प्रक्षेत्र में जैविक खेती की विभिन्न तकनीकों जैसे वर्मिकम्पोस्ट नॉडेप, हरी खाद इत्यादि का भी प्रदर्शन किया जाकर जैविक खाद प्राप्त की जाती है।

प्रतिभागियों द्वारा प्रदर्शन प्रक्षेत्र पर ए-फ्रेम द्वारा समोच्च रेखा का चिन्हांकन, मृदा व जल संरक्षण संबंधित संरचनाओं का निर्माण, उद्यानिकी फसलों में बिंदिंग, ग्रापिंग, लेयरिंग इत्यादि के प्रयोग किये जाना अत्यन्त उपयोगी एवं लाभकारी बताये जाते हैं।

प्रयोगशालाएँ :

- **मृदा विज्ञान प्रयोगशाला :**

मृदा एवं जल प्रबंधन के क्षेत्र में आवश्यक विभिन्न गुणधर्मों के निर्धारण व जांच किये जाने एवं संबंधित उपकरणों के उपयोग के प्रदर्शन किये जाने के उद्देश्य से संस्थान में एक मृदा विज्ञान प्रयोगशाला विकसित की गई है। प्रयोगशाला में सिंचाई नियोजन किये जाने हेतु आवश्यक विभिन्न उपकरण जैसे टेंशोमीटर, मॉइश्चर मीटर, इंफ्रारेड थर्मामीटर इत्यादि पर प्रेक्टिकल कराये जाते हैं। मिट्टी की गुणवत्ता परीक्षण हेतु pH meter, Conductivity Bridge, Flame Photometer, Spectrophotometer, Atomic Absorption Spectrometer इत्यादि उपकरणों द्वारा मृदा में पाये जाने वाले विभिन्न प्रमुख पोषक तत्वों (N, P, K, Ca, Mg, S इत्यादि) एवं सूक्ष्म पोषक तत्वों (Fe, Mn, Zn, Cu, Bo, Mo, Cl इत्यादि) की जांच की सुविधा है एवं इन उपकरणों का उपयोग सिखाया जाता है।



- **हाइड्रॉलिक लेबोरेटरी :**

उपयोग में लाये जाने वाले जल बहाव ज्ञात करने हेतु विभिन्न उपकरणों के प्रदर्शन एवं प्रयोग संपादित किये जाने के उद्देश्य से संस्थान में एक हाइड्रॉलिक लेबोरेटरी है जहाँ विभिन्न पल्ट्यूम्स एवं नोचेस द्वारा जल बहाव ज्ञात किया जाने के प्रशिक्षण दिये जाते हैं।



- **संगणक प्रयोगशाला :**

शासन द्वारा संचालित की जा रही विभिन्न ग्रामीण विकास एवं जल संसाधन विकास की संरचनाओं में कम्प्यूटर एप्लीकेशन के उपयोग पर स्टाफ को प्रशिक्षित किये जाने के उद्देश्य से संस्थान में एक संगणक प्रयोगशाला है। प्रयोगशाला द्वारा संस्थान की वेबसाइट www.mpwalmi.org निर्मित की गई है, जिसमें निम्न जानकारियां प्राप्त की जा सकती है :—



1. संस्थान के बारे में 2. संस्थान के उद्देश्य
3. शासी निकाय एवं कार्यकारिणी समिति की जानकारी
4. संकाय सदस्यों की जानकारी 5. केम्पस 6. वाल्मी पहुँच मार्ग का मानचित्र 7. संस्थान की विभिन्न सुविधाओं जैसे – छात्रावास, भोजनालय, व्याख्यान कक्ष, ऑडिटोरियम, पुस्तकालय, सेमीनार हॉल आदि
8. संस्थान द्वारा प्रकाशित प्रतिवेदन आदि 9. प्रशिक्षण संबंधी जानकारी
10. फोटो गैलरी 11. विजन, मिशन, गोल एवं वेल्यूज़।

अधोसंरचनात्मक सुविधाएँ :

- व्याख्यान कक्ष एवं कांफ्रेंस हॉल :**

संस्थान में 08 व्याख्यान कक्ष उपलब्ध हैं। जहाँ 30–50 प्रतिभागियों को प्रशिक्षण प्रदाय किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त 170 व्यक्तियों की क्षमतायुक्त ऑडिटोरियम 60 व्यक्तियों की क्षमतायुक्त कांफ्रेंस हॉल, 25 व्यक्तियों की क्षमतायुक्त मीटिंग हॉल उपलब्ध है। प्रतिभागियों द्वारा विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन हेतु संस्थान में एक Open Air Auditorium भी निर्मित है,



- पुस्तकालय :**

संस्थान में प्रशिक्षणार्थियों के लिए सुविधा उपलब्ध है, जिसमें कृषि, सिंचाई, कम्प्यूटर, अर्थशास्त्र, पर्यावरण, मुदा विज्ञान, प्रबंधन, ग्रामीण विकास, समाज विज्ञान, साहित्य (हिन्दी व अंग्रेजी) तथा विभिन्न विषयों व संकायों से संबंधित लगभग 2400 पुस्तकों का संग्रह है। इसके अतिरिक्त दैनिक समाचार पत्र, पत्रिकायें, जर्नल्स, वीडियो/ऑडियो उपलब्ध हैं। पुस्तकालय में लगभग 40–45 प्रशिक्षणार्थियों के बैठने की व्यवस्था उपलब्ध है।

- छात्रावास :**

संस्थान में 63 शयन कक्ष, 02 डॉरमेट्री तथा एक सामुदायिक भवन (भोज परिसर) सहित 304 प्रशिक्षणार्थियों के ठहरने की सुविधा उपलब्ध है। छात्रावास में सभी कक्ष सर्वसुविधायुक्त सुसज्जित हैं।



- मेस :**

संस्थान में 150 प्रशिक्षणार्थियों की बैठक व्यवस्था के साथ एयरकूल्ड भोजनालय की सुविधा उपलब्ध है, जिसमें प्रतिदिन सुबह का चाय—नाश्ता, दोपहर एवं रात्रि भोजन, तय मेनु अनुसार पौष्टिक भोजन उपलब्ध कराया जाता है। भोजनालय में आर.ओ. का शुद्ध व शीतल पेयजल, वॉशरूम आदि सुविधाएँ उपलब्ध हैं। प्रशिक्षण के दौरान विशेष अवसरों पर जैसे उद्घाटन समारोह, समापन समारोह, अति विशिष्ट अतिथियों के आगमन इत्यादि पर हाई टी एवं स्पेशल डिनर भी आयोजित किया जाता है।

- परिवहन :**

संस्थान शहर से लगभग 5–6 किलोमीटर की दूरी पर है। संस्थान की 40 सीटर बस द्वारा प्रशिक्षणों में प्रतिदिन न्यू मार्केट (6.00 से 8.30 बजे तक) भ्रमण एवं अंतिम दिन बस स्टैण्ड एवं रेल्वे स्टेशन पर छोड़ने की व्यवस्था की जाती है।

स्थानीय भ्रमण व 200 किलोमीटर की सीमा में प्रक्षेत्र भ्रमण संस्थान की बस द्वारा कराया जाता है। प्रदेश व देश के अन्य राज्यों में अनुबंधित बाहरी एजेंसी से ए.सी. बस व छोटे वाहनों की व्यवस्था की जाती है।





खेलकूद :

संस्थान के छात्रावास में प्रतिभागियों हेतु वॉलीबाल, बेडमिंटन, केरम, टेबल टेनिस, क्रिकेट इत्यादि खेलकूद सुविधाएँ प्रदाय की जाती हैं एवं दीर्घकालीन प्रशिक्षणों में खेलकूद प्रतियोगिताएँ भी आयोजित कराई जाती हैं।



स्टाफ क्वार्टर्स :

संस्थान के अधिकारियों एवं कर्मचारियों हेतु आवासीय व्यवस्था सृजित की गई है, जिसमें 02 ई टाइप, 04 एफ टाइप, 10 जी टाइप, 20 एच टाइप, 50 आई टाइप क्वार्टर्स सम्मिलित हैं।

प्रकाशन एवं पठन सामग्री (Publications & Reading Materials) :



संस्थान द्वारा संपादित किये जा रहे विभिन्न क्रियात्मक अनुसंधान कार्यों, परियोजनाओं एवं प्रशिक्षणों की Reports, Publications एवं पठन सामग्री विकसित की जाकर पुस्तकालय में संदर्भ प्रयोजन हेतु उपलब्ध रहती है। कुछ प्रमुख Publications निम्नानुसार हैं:-

1. सहभागी सिंचाई प्रबंधन।
2. जलग्रहण क्षेत्र विकास एवं प्रबंधन।
3. कृषक सहभागी क्रियात्मक अनुसंधान कार्यक्रम।
4. ऑकारेश्वर सागर परियोजना का सैच्य विकास नियोजन।
5. उद्यानिकी विकास मेन्यूअल।

भविष्य के आयाम :

- संस्थान को एकीकृत खेती के प्रदर्शन स्थल के रूप में विकसित किया जाना एवं कृषि, उद्यानिकी, सिंचाई प्रबंधन, मृदा व जल संरक्षण इत्यादि की आधुनिक उन्नत प्रौद्योगिकी का विस्तार करना।
- प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना अन्तर्गत More Crop per Drop, हर खेती को पानी, जलग्रहण क्षेत्र विकास इत्यादि पर सलाहकारिता सेवाएँ प्रदाय करना एवं District Irrigation Plan (DID) तथा State Irrigation Plan (SIP) के निर्माण में वांछित सहयोग प्रदान करना।
- ग्लोबल वार्मिंग के दुष्प्रभाव के परिप्रेक्ष्य में पर्यावरणीय संतुलन हेतु Carbon Credit संबंधित अध्ययन व अनुशंसाएँ।
- Virtual Water Management
- जल प्रबंधन, सूचना प्रौद्योगिकी, आजीविका निर्माण, जलग्रहण क्षेत्र विकास, सामाजिक कार्य इत्यादि क्षेत्रों में Certificate एवं Diploma Courses आरम्भ करना।
- जल एवं भूमि प्रबंधन के क्षेत्र में Data Base संकलित कर Data Centre के रूप में कार्य कर सलाहकारिता सेवाएँ प्रदान करना।
- ग्राम विज्ञान केन्द्र का विकास।
- संस्थान को राष्ट्रीय स्तर के प्रशिक्षण संस्थान के मानदंडों के अनुरूप विकसित किया जाना।



संकाय :

1. श्रीमती उर्मिला शुक्ला,
2. श्री के.के. शुक्ला
3. श्री ही.के. भट्ट
4. डॉ. रवीन्द्र ठाकुर

वर्तमान में पदस्थ अधिकारियों की सूची :

- | | |
|---|---|
| आईएस संचालक
प्रशासकीय अधिकारी
संकाय प्रमुख, सिंचाइ
अभियांत्रिकी संकाय
संकाय प्रमुख, कृषि संकाय
एवं प्रभारी प्रशिक्षण | 5. श्री उमेश शर्मा
6. श्री अजय जौहरी
7. श्री एस.के. श्रीवास्तव
8. श्री संजय श्रीवास्तव |
|---|---|

उपायुक्त
लेखाधिकारी
अनुविभागीय अधिकारी
अनुभाग अधिकारी

संस्थान के प्रशिक्षण कार्यक्रमों में नवाचार

विदित है कि म.प्र. जल एवं भूमि प्रबंध संस्थान, भोपाल द्वारा विगत कई वर्षों से लघु एवं दीर्घ अवधि के प्रशिक्षण कार्यक्रम शासन के विभिन्न विभागों के अधिकारियों / कर्मचारियों की प्रशिक्षण आवश्यकता अनुसार आयोजित किये जा रहे हैं। इन प्रशिक्षणों में यह अनुभव किया गया है कि प्रशिक्षण कार्यक्रमों में तकनीकी व प्रशासनिक प्रकृति के व्याख्यानों का निरन्तर समावेश प्रतिभागियों को तनाव ग्रस्त कर एक बोझिल वातावरण निर्मित करता है जिससे प्रतिभागियों में आनन्द व उत्साह की कमी आने लगती है एवं वे तनाव ग्रस्त रहने लगते हैं। प्रतिभागियों को एक स्वरूप, उत्साहवर्धक एवं आनन्दपूर्ण वातावरण में प्रशिक्षण प्रदाय किया जावे एवं प्रतिभागियों के बीच मजबूत संबंध (Strong Bonding) निर्मित हो पाये, इस हेतु संस्थान द्वारा प्रशिक्षण अवधि में कुछ नवाचार / प्रयोग को समावेशित किया गया है जिसके परिणाम अत्यन्त प्रभावी परिलक्षित हुए हैं। कुछ महत्वपूर्ण नवाचार निम्नानुसार हैः—

1. सहभागिता आधारित मूल्यांकन :

पूर्व में प्रशिक्षण कार्यक्रमों एवं संसाधन व्यक्तियों का मूल्यांकन प्रतिभागियों द्वारा एक Set Format में किया जाता था, जिसे अब प्रतिभागियों द्वारा प्रत्येक दिवस प्रशिक्षण समाप्त होने के उपरान्त सामूहिक रूप से किया जाता है। प्रत्येक दिवस प्रशिक्षण उपरान्त उस दिन Lead role निभा रहे प्रतिभागी द्वारा कक्षा में दिनभर की गतिविधियों की एक रिपोर्ट प्रस्तुत की जाती है एवं प्रतिभागियों द्वारा प्रत्येक प्रशिक्षण गतिविधि पर उनके विचार (Feedback) प्राप्त किये जाते हैं। तत्पश्चात् सामूहिक निर्णय लेते हुये विभिन्न गतिविधियों का मूल्यांकन किया जाता है। उस विशेष दिन हेतु नियुक्त रेपोर्टर, फोड बैंक सेशन की रिपोर्ट बनाता है एवं कोर्डिनेटर को प्रस्तुत करता है। चक्रीय आधार (Rotational Basis) पर यह कार्य प्रत्येक प्रतिभागी द्वारा किया जाता है। इस गतिविधि से न सिर्फ प्रतिभागी प्रशिक्षण के दौरान एविटव रहते हुए पार्टीसिपेट करते हैं अपितु उनमें प्रस्तुतीकरण कौशल भी विकसित होता है।



2. सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन :

दीर्घावधि प्रशिक्षण कार्यक्रमों में प्रशिक्षण के अंतिम सप्ताह प्रतिभागियों द्वारा एक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया जाता है।

कार्यक्रम में गीत, संगीत, नृत्य, Skit, कविता पाठ इत्यादि का समावेश किया जाकर प्रतिभागियों को उनकी कला प्रदर्शित किये जाने का अवसर प्राप्त होता है। कार्यक्रम का संचालन एवं उसकी रूपरेखा का निर्धारण प्रतिभागियों द्वारा ही किया जाता है। मंच की साज-सज्जा, प्रशिक्षण कार्यक्रम के विषय जैसे उद्यानिकी एवं वानिकी, ग्रामीण विकास, जल संसाधन इत्यादि थीम पर आधारित रहती है, जो प्रतीकात्मक तौर पर प्रशिक्षण विषय को प्रदर्शित करती है। इस तरह की गतिविधि न सिर्फ प्रतिभागियों को मनोरंजन व आनन्द प्रदान करती है अपितु उनमें मौजूद कौशल एवं रचनात्मकता (Creativity) को प्रदर्शित करने का अवसर भी प्रदाय करती है। इस तरह के सांस्कृतिक कार्यक्रमों में संबंधित विभाग के अधिकारियों एवं संसाधन व्यक्तियों को भी आमंत्रित किया जाता है, जिनके



साथ कार्यक्रम उपरान्त एक अनौपचारिक वातावरण में रात्रि भोजन का आयोजन किया जाता है।

3. खेलकूद गतिविधियाँ :

प्रत्येक दिवस प्रशिक्षण कार्यक्रम उपरान्त प्रतिभागियों को छात्रावास में विभिन्न खेलकूद गतिविधियों जैसे बेडमिंटन, वॉलीबॉल, टेबलटेनिस, शतरंज, कैरम, रस्साकशी इत्यादि की सुविधा उपलब्ध कराई जाती है। प्रतिभागियों में से ही चयनित Sports Monitors इन गतिविधियों का संचालन करते हुए विभिन्न मैच आयोजित करते हैं एवं सांस्कृतिक संध्या आयोजन के समय जीतने वाले प्रतिभागी / दल को पुरस्कृत किया जाता है। खेलकूद गतिविधियों प्रतिभागियों को प्रशिक्षण के एकरसता पूर्ण वातावरण से बाहर निकाल उन्हें मनोरंजन प्रदान करती है। साथ ही उनके मानसिक एवं शारीरिक विकास में भी सहायक होती है।



4. समूहप्रस्तुतीकरण एवं रोलप्ले :

प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सम्मिलित किये गये विषयों का चयन कर उन्हें प्रतिभागियों के विभिन्न समूहों को आवंटित किये जाते हैं। जिन्हें SWOT, LFA इत्यादि माध्यम से समूहों द्वारा प्रस्तुत किया जाता है। साथ ही विशेष प्रशिक्षण गतिविधियों हेतु Role Play भी करवाया जाता है। इस तरह की exercise, team अथवा ग्रुप में काम करने की सीख प्रदाय करती हैं एवं Stage fear को दूर करती है।



दीर्घकालिक प्रशिक्षणों में इस तरह की गतिविधियों के समावेश से प्रतिभागियों में एक विशेष अंतर देखा गया है। पूर्व में जहाँ प्रतिभागी प्रशिक्षणों के तनाव ग्रस्त व नीरस वातावरण से बाहर आने हेतु प्रशिक्षण समाप्ति की बेसब्री से प्रतीक्षा करते थे वहीं वर्तमान परिदृश्य में वे प्रशिक्षणों में पूरी रूचि लेकर प्रशिक्षण Extend किये जाने के सुझाव देने लगे हैं। प्रतिभागियों के बीच इस तरह की गतिविधियों से एक Strong Bonding भी निर्मित होना अनुभव किया गया है। संस्थान से भी उनका जुड़ाव एक बेहतर रूप में सामने आने लगा है और वे संस्थान के अधिकारियों से सतत् सम्पर्क में रहने का प्रयास करते हैं।



अन्य नवाचार :

संस्थान में इस वर्ष तकनीकों के प्रदर्शन एवं लाभ लेने की दृष्टि से निम्न नवाचार प्रयोग किये गये हैं :-

छात्रावास की मेस से प्राप्त अपशिष्ट का प्रबंधन

संस्थान के छात्रावास की मेस, जहाँ प्रतिदिन लगभग 100–150 प्रतिभागियों के भोजन की व्यवस्था की जाती है, से सब्जियों एवं फलों के छिलके तथा अन्य प्रकार के जैविक अपशिष्ट पदार्थ प्राप्त होते हैं। इन अपशिष्ट पदार्थों का उपयोग जैविक खाद बनाने के उद्देश्य से छात्रावास परिसर में वर्मी कम्पोस्टिंग की एक यूनिट स्थापित की गई है। इस यूनिट में केंचुएँ द्वारा मेस से प्राप्त जैविक अपशिष्ट पदार्थों को जैविक खाद में परिवर्तित किया जा रहा है, जिसका उपयोग संस्थान परिसर के फल वृक्षों इत्यादि में किया जाना प्रस्तावित है। चक्रीय रूप से वर्मीकम्पोस्ट प्राप्त करने के उद्देश्य से वर्मीकम्पोस्टिंग की 4 गढ़े वाली विधि हेतु एक टांका बनाये जाने का कार्य भी प्रगति पर है। केंचुएँ से खाद प्राप्त करने की इस गतिविधि से न सिर्फ छात्रावास की मेस से प्राप्त अपशिष्ट पदार्थों का पर्यावरणीय दृष्टि से कुशल प्रबंधन हो परिसर में स्वच्छ वातावरण निर्मित होगा अपितु जैविक उत्पाद भी प्राप्त हो पावेंगे। साथ ही छात्रावास में रहने वाले प्रशिक्षणार्थी भी इन विधियों का अवलोकन कर लाभान्वित होंगे एवं अपने—अपने क्षेत्रों में इस विधि का प्रचार प्रसार कर स्वच्छ भारत के निर्माण में सहयोग प्रदान करेंगे।



Roof Water Harvesting द्वारा नलकूप रीचार्ज :

विगत दिनों संस्थान के हिल टॉप परिसर में एक नलकूप का खनन किया गया है, जिसके द्वारा संस्थान के छात्रावास एवं अन्य जगहों की जल आवश्यकता की पूर्ति की जा रही है। इस नलकूप की Yield लगातार बनाये रखने के उद्देश्य से संस्थान के छात्रावास की छत से वर्षा ऋतु में प्राप्त जल को नलकूप पुनःभरण (Recharge) हेतु उपयोग में लाने की कार्यवाही प्रचलन में है एवं छत से प्राप्त जल को इकट्ठा करने एवं नलकूप के चारों तरफ Soakpit बनाए जाने का कार्य प्रगति पर है। नलकूप पुनःभरण की इस विधि के प्रदर्शन से छात्रावास में रहने वाले प्रतिभागियों को भी वर्षा जल संग्रहण की जानकारी प्राप्त होगी।

संरक्षित खेती के प्रदर्शन :

संस्थान में आयोजित किये जाने वाले उद्यानिकी एवं जल प्रबंधन विषयक प्रशिक्षण के प्रतिभागियों को एवं अन्य प्रतिभागियों को भी उद्यानिकी की अद्यतन उन्नत तकनीकों से अवगत करवाने के उद्देश्य से संस्थान के हिल टॉप परिसर पर संरक्षित खेती की तकनीकी के प्रदर्शन डाले जा रहे हैं। इस हेतु नेट हाउस, पॉली हाउस इत्यादि निर्मित किये जाने का कार्य किया जा रहा है। नेट हाउस/पॉली हाउसेस में सब्जी उत्पादन किया जाकर उसमें Fertigation, Fogging, Drip system इत्यादि आधुनिक तकनीकों का प्रदर्शन किया जावेगा। सब्जी उत्पाद का उपयोग छात्रावास की मेस में किया जावेगा।

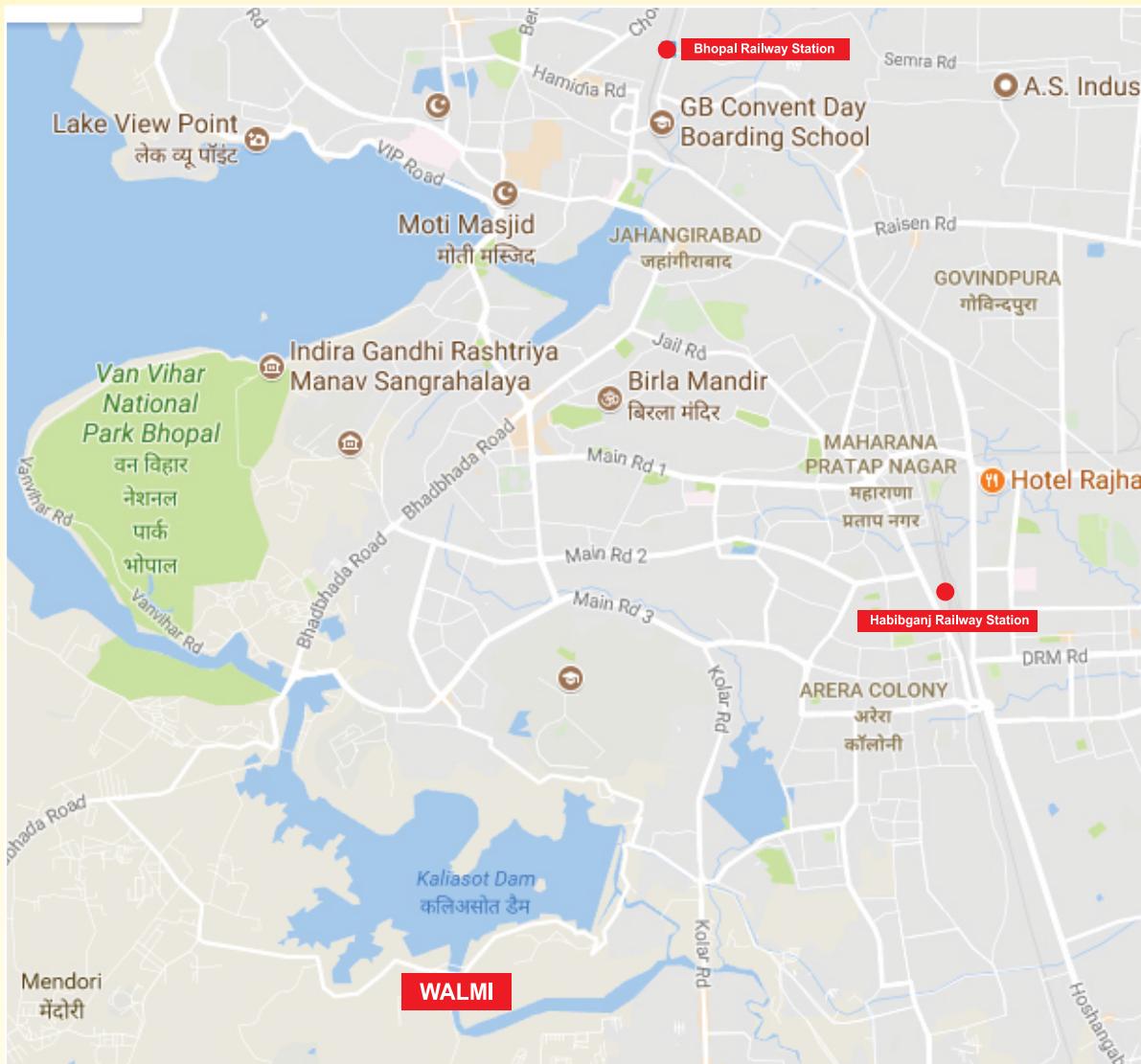
उपरोक्त समस्त कार्य विभागीय संसाधनों से पूर्ण किये जा रहे हैं।





वाल्मीकी गतिविधियाँ





● भोपाल रेलवे स्टेशन से दूरी 15.3 किमी।

● हबीबगंज रेलवे स्टेशन से दूरी 8.8 किमी।

For further information, please contact:



DIRECTOR

M.P. WATER AND LAND MANAGEMENT INSTITUTE

WALMI Hills, Near Kaliasote Dam, P.B. No. 538, Bhopal - 462 016

Ph.: 4082502, 4082520 (Training), 4082523 (Hostel), Fax : 0755-2492432,

e-mail: mpwalmi@gmail.com, Website: mpwalmi.org